संसदीय क्षेत्र कोटा में अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण समाज की नवीन कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

जांगिड़ ब्राह्मण समाज सृष्टि के निर्माता भगवान विश्वकर्मा जी के अनुयायी, भगवान विश्वकर्मा जी के बताए गए मार्ग, जीवन दर्शन पर चलने वाला समाज है। आज भी इस समाज पर भगवान विश्वकर्मा जी का आशीर्वाद है। इसीलिए इतने वर्षों बाद भी यह समाज आज भी शिल्पकार है। भगवान विश्वकर्मा सृष्टि के निर्माता थे, लेकिन वर्तमान में भगवान विश्वकर्मा ने जिस सृष्टि को बनाया, उसकी कला और शिल्प के रूप में आपका इस देश में बहुत बड़ा योगदान है। एक ऐसा समाज, जो कठिन परिश्रमी है, जिसमें काम करने का समर्पण है, जिसके हाथों में अद्भुत कला है और उसके साथ-साथ आध्यात्मिक तथा धर्म को मानने वाला, नैतिकता और सत्य पर चलने वाला समाज आज अपने काम एवं अपनी कार्यकुशलता के कारण, अपनी सामाजिक सेवाओं के कारण, अपने संस्कारों के कारण इस समाज ने एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

समाज के पुश्तैनी और प्राचीनतम काम में अपनी कला, अपनी बौद्धिक क्षमता, अपने ज्ञान, अपनी रचनात्मक कला से आपने एक विशिष्ट स्थान इस कला के क्षेत्र में बनाया है।

दुनिया के अंदर जितनी भी बेहतरीन कला और संस्कृति को डेवलप करने का काम किया है, वह आपने किया है। इसलिए भारत का नाम है। आज भी अगर हम प्राचीनतम मंदिरों में जाते हैं और उन प्राचीनतम मंदिरों की कलाओं को देखते हैं, उनकी रचनात्मक शैली को देखते हैं तो उनको बनाने में कहीं न कहीं आपके समाज के लोगों का पसीना और मेहनत थी।

मैं कई बार प्राचीनतम मंदिरों में गया तो मैंने वहां पर लकड़ी के कामों को देखा तो यह लगता था कि आपके हाथों में एक अद्भुत कला है। एक ऐसी कला है, जो वर्तमान में नहीं मिलती है। साधन नहीं हुआ करते थे, संसाधन नहीं हुआ करते थे, टेक्नोलॉजी की नई मशीनें नहीं हुआ करती थी, लेकिन अपने हाथ, अपनी कला, अपने दिमाग से, जो डिजाइन तैयार किया, उसके कारण अगर आज हमें अपनी प्राचीनतम कला और संस्कृति पर गर्व होता है तो आपके कारण होता है। अगर आज विश्व के अंदर देश कहीं भी जाकर गौरव करता है तो उस गौरव को वह आपकी कला और संस्कृति के कारण करता है। मैं अभी कुछ दिन पहले कंबोडिया गया था। कंबोडिया में अंकोरवाट का जो मंदिर है, वह सबसे प्राचीनतम मंदिर है। उस प्राचीनतम मंदिर के अंदर जो लकड़ी डिजाइन और कलाकृति थी, वह भी भारत के जांगिड़ समाज के व्यक्तियों ने निर्माण की थी।

मैं इंडोनेशिया गया और वहां मैंने देखा कि वहां फर्नीचर की मार्केट में जिस तरह से नया डिजाइन डेवलप हुआ है, उसमें भी भारतीय मूल के जांगिड समाज के लोगों का योगदान है।

मुझे खुशी है कि समाज के नौजवानों ने बौद्धिक क्षमता, कार्यकुशलता और कड़ी मेहनत से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त की है। आज मुझे खुशी है कि इस प्रतिभा सम्मान समारोह में उन सभी बालक-बालिकाओं को, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया है, उनका भी सम्मान किया जाएगा।

मैं नए पदाधिकारियों को आग्रह करना चाहता हूं कि हमारी विरासत की कला, संस्कृति, रचनात्मक कार्य में हम नया क्या परिवर्तन कर सकते हैं। वह परिवर्तन आधुनिक भी होना चाहिए और हमारी विरासत और संस्कृति भी रहनी चाहिए। जो कुछ भी समाज में हमारे पूर्वजों का योगदान रहा, जिसके कारण हमें यश मिला है, सम्मान मिला है। इस सम्मान को आगे बढ़ाते हुए समाज की संस्कृति और संस्कार को आगे ले जाकर किस तरह से यह कार्यकारिणी एक ऐसी रचना कर सकती है, ऐसे निर्माण कार्य कर सकती है, जिससे कि हम अपने अतीत को गौरवान्वित करते हुए अपनी वर्तमान व्यवस्था में उसके गौरव, सम्मान को और बढ़ाएं, ये जिम्मेदारी इस कार्यकारिणी की है।

मैं पदाधिकारियों से आग्रह करता हूं कि अपनी संस्कृति और संस्कार को आगे बढ़ाते हुए हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार दिलाने का काम करें।

मुझे पता है कि कड़ी मेहनत और परिश्रम के बाद भी समाज आर्थिक स्थिति से ज्यादा मजबूत नहीं है, लेकिन आपके अंदर समर्पण है, स्वाभिमान

है। हम भगवान विश्वकर्मा जी की संतान हैं। अपने समाज को आगे बढ़ाने के लिए हमें काम करना है। मैं हमेशा आपके साथ हूं और आपका प्यार, स्नेह तथा आशीर्वाद मुझे मिला है। मेरे लायक जब भी कोई सेवा हो, आपका सेवक कोटा से लेकर दिल्ली तक आपकी सेवा करने के लिए तैयार है। आपका प्यार, स्नेह और आशीर्वाद इसी तरह से बना रहे।